M. A. Semester - I
Philosophy CC - 03

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Plato's Theory of Idea.

(Part - II)

Plato का विज्ञानवाद उसके सत्य के सर्वांशवाद पर आधारित है। इस अर्थ में Plato वस्तुवादी है। सर्वांशवाद का अर्थ यह है कि वह मानता था कि वास्तविक सत्य मानसिक प्रत्ययों और बाहरी तथ्यों पर आधारित होता है। प्रत्ययात्मक ज्ञान को प्रमाणित सिद्ध करने के लिए आवश्यक है कि उन प्रत्ययों से सम्बन्धित वास्तविक तथ्य भी तार्किक दृष्टि से उपस्थित हो। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए Plato ने मानसिक प्रत्ययों से स्वतन्त्र विज्ञानों को मान्यता दी है। यदि ये विज्ञान न माने जायें तो हमारा प्रत्ययात्मक ज्ञान मिथ्या सिद्ध हो जाएगा। Plato के सत्य सिद्धान्त को प्रत्यय प्रतिनिधित्ववाद अथवा प्रतिबिम्बवाद भी कहा जाता है क्योंकि इनके अनुसार सत्य सर्वांश बिम्ब और प्रतिबिम्ब के परस्पर संगति का परिणाम होता है।

Plato के ~~अनुसार~~ विज्ञानवाद की स्थापना एक दूसरे दृष्टिकोण से भी प्रमाणिक एवं अनिवार्य सिद्ध होती है। व्यवहारिक जीवन में हमें 'सौन्दर्यता', 'न्याय' 'मनुष्यत्व' इत्यादि के प्रत्यय नहीं प्राप्त हो सकते; हमें सिर्फ इनके उदाहरण ही दे सकते हैं किन्तु इन्द्रिय प्रत्यक्ष के द्वारा हम सौन्दर्य को नहीं देख सकते हैं अर्थात् व्यवहारिक जगत् में सुन्दर वस्तुओं के अतिरिक्त कोई सौन्दर्य नहीं है; अतः Plato इस निष्कर्ष पर आता है कि व्यवहारिक जगत् से परे एक पारमार्थिक जगत् है, जहाँ इन प्रत्ययों की सत्ता है। ये प्रत्यय नित्य, शाश्वत अपरिणामी एवं मानव की क्रिया से स्वतन्त्र हैं।

Plato के अनुसार विज्ञान द्रव्य स्वरूप है।

Scanned with CamScanner

द्रव्य उसे कहते हैं जिसकी सत्ता स्वयं अपने पर निर्भर करती है, वह किसी अन्य पर निर्भर नहीं करता है। अन्य वस्तु या गुण द्रव्य पर आधारित हो सकते हैं, पर द्रव्य किसी पर आधारित नहीं होता है।

विज्ञान सामान्य तत्त्व है यह कोई विशेष वस्तु नहीं है। 'अश्व' का विज्ञान कोई विशेष अश्व नहीं है। यह दिक् और काल से सीमित नहीं होता है, यह सभी अश्वों का सामान्य प्रत्यय है जो समान रूप से सभी अश्वों में विद्यमान है।

विज्ञान वस्तुएँ नहीं विज्ञान तो विचार मात्र है। विज्ञान रूप होते हुए भी व्यक्तिनिष्ठ नहीं है। वे न तो किसी व्यक्ति का विज्ञान है, न ईश्वर के हीं वे सभी प्रकार की आत्माओं से स्वतन्त्र वस्तुनिष्ठ विज्ञान है।

प्रत्येक विज्ञान एक इकाई है, यह भेदों में अनुस्यूत अभेद है।

विज्ञान निर्विकार और अविनाशी है। यह नित्य, शाश्वत, अव्यय और अक्षररूप है। यदि जगत के सारे मनुष्य समाप्त भी हो जायें, तो भी मनुष्य का विज्ञान अमर होगा। सामान्य विशेषों की सत्ता से परे है।

सामान्य बोध-स्वरूप है, यानि उन्हें बुद्धि द्वारा हीं ग्रहण कर सकते हैं। विशेषों का ज्ञान हम इन्द्रियानुभूति द्वारा प्राप्त करते हैं, परन्तु सामान्यों का ज्ञान बुद्धि द्वारा हीं होता है।

विज्ञान व्यवहारिक जगत में न रहकर अतिन्द्रिय जगत में रहते हैं। इन्द्रिय जगत की वस्तुएँ विशेष हैं और देश काल द्वारा आवृत हैं परन्तु विज्ञान जो सामान्य और देश काल से परे हैं, अतिन्द्रिय जगत के हीं निवासी हो सकते हैं यही Plato का द्वैतवाद है।

विज्ञान या रूप 'सत्ता' और 'मूल्य' दोनों दृष्टियों से विशेष की अपेक्षा श्रेष्ठतर है। Plato के अनुसार विज्ञान विशेषों के आदर्श रूप हैं और विशेष उसके विपत्तिमात्र हैं।

आलोचना — Plato का Idea सम्बन्धी सिद्धान्त आलोचना का विषय बना है। आलोचकों का कहना है कि Plato Idea के आधार पर हीं समस्त विश्व की व्याख्या की है और

Idea को ही समस्त वस्तुओं का कारण मान लिया है। किन्तु Idea इस विश्व की व्याख्या नहीं कर पाता है। Idea के द्वारा विश्व की व्याख्या तभी हो सकती है जबकि यह कहा जाय कि विश्व की वस्तुएँ Idea द्वारा उत्पन्न हुई है। लेकिन यह कहना यथार्थ नहीं होगा क्योंकि उत्पत्ति गति की धारणा को संलग्न रखती है, लेकिन Plato यह बताता है कि Idea में गति नहीं है। वह अपरिवर्तनशील है। अतः एक अपरिवर्तनशील सत्ता किसी वस्तु को उत्पन्न नहीं कर सकती।

x————————x